आज का पुरुषार्थ, 24 July 2022

From: BK Suraj bhai **Website**: www.shivbabas.org

धारणा – *" Love और Law में बैलेंस यही बाबा की शिक्षा है "*

ईश्वरीय मार्ग पर चलने वाले रूहानी बच्चों को **शिवबाबा** ने love और law का balance रखना सिखाया है। इस balance से हम निरंतर आगे बढ़ेंगे। हमारा जीवन **महानताओं** के शिखर पर पहुँचेगा।

थोड़ा सा इसका **स्पष्टीकरण** कर लेना आवश्यक है। जैसे माँ बच्चों को प्यार करती है। लेकिन अगर वह इन प्यार को मर्यादाओं पर न रखें तो वही प्यार बच्चों को बिगाड़ देते है।

इसलिए डिसिप्लीन रखना भी परम आवश्यक होता है। सिम्पल भाषा में लॉ फूल रहना माना discipline में रहना। **अपने को discipline में रखना है,** और **प्यार स्वरुप बनकर भी रहना है।**

देखिये हमारा यह ईश्वरीय परिवार है। **हम godly student है।** लौकिक में भी यह उचित है कि टीचर बच्चों को प्यार भी दे और डिसिप्लीन भी रखे।

तो बच्चे प्यार के कारण सबकुछ ध्यान से सुनेंगे। शिक्षक की हर बात मानेंगे। और डिसिप्लीन के कारण पढ़ाई बहुत अच्छी तरह करेंगे।

हमारे ईश्वरीय परिवार में शिवबाबा ने जो **प्यार के सागर है** उन्होंने आकर सबको भरपूर प्यार दिया। लेकिन ईश्वरीय मर्यादायें भी बहुत सिखाई।

प्यार देकर पावन बनने की डायरेक्शन दी। और उस प्यार में सभी ने इस **श्रेष्ठ** पथ को स्वीकार कर लिया। लेकिन बहुत सारी **मर्यादायें** भी सीखा दी। जैसे ...

" तुम भाई बहनों में आपस में बहुत प्यार भी होना चाहिए। लेकिन मर्यादित प्यार "

प्यार का अर्थ यह नहीं कि हम सारी मर्यादाओं का उल्लंघन कर दे। केवल प्यार से रहने लगे। साथ रहने लगे। और प्यार हमारा attachment में बदल

जाये। सारा दिन एक दुसरे से बात करते रहे। एक दुसरे की बुद्धियोग को अपनी ओर attract करते रहे।

इसको समाप्त करने के लिए बाबा ने हमें **डिसिप्लीन लाइफ** सिखाई ... "LAW FULL"

तो बाबा ने हमें जो लॉ सिखाई उसे हमें खुशी से पालन करते रहना चाहिए। तो प्यार लव और लॉ का बेलेंस जीवन में आता जायेगा।

मान लिजिए आप टीचर है। तो आपको आपके साथियों को भी **law-full भी रखना है। लेकिन प्यार भी देना है।**

कहीं कहीं टीचर लॉ फूल ज्यादा रहते है। **Strict ज्यादा रहती है।** Love देती नहीं। न आपस में लव फूल रहने देती न खुद देती है। इससे नुकसान बहुत होती है। जैसे कि उनके पास कोई दुसरे टीचर रहना पसंद नहीं करती।

इसलिए love बहुत हो लेकिन discipline भी हो। जो love-full होते है उनके पास सब आते है। हम सब जानते है कि **प्यार की संसार में सबसे बड़ी आवश्यकता है।** और आत्मा भी प्रेम स्वरुप है।

लेकिन आध्यात्मिक ऊँचाई तक पहुँचने के लिए साथ में बहुत law-full, बहुत मर्यादित होना भी आवश्यक है। नहीं तो बहुत नुकसान हो जाता है।

मान लो बाबा law सिखाई है ..

" सबेरे उठो, मुरली सुनो, सबसे सम्मान से बातें करो, मुख से कटु वचन नहीं निकालना "

लेकिन प्यार में हम कटु वचन भी निकालते है। कुछ बार तो मनुष्य सहन करेंगे। लेकिन अगर रोज ही हम यह करे तो प्यार कड़वाहट में बदल जायेगा। टकराव में बदल जायेगा।

इसलिए हमें दोनों का बहुत सुन्दर **संतुलन** जीवन में रखना है। प्यार स्वरुप रहे। प्यार देते चले। लेकिन डिसिप्लीन्ड पहले हम स्वयं को बनाये।

बहुत ही स्ट्रिक्ट हमें नहीं होना है। जो स्ट्रिक्ट है उन्हें कोई पसंद नहीं करता है।

स्ट्रिक्ट होना है स्वयं में, स्वयं की धारणाओं में। लेकिन सम्बन्धों में हमें बहुत love-full रहना है। प्रेम स्वरुप बनके रहना है।

तो हमारी भी स्थिति अच्छी, और दुसरों को भी बहुत लाभ होगा।

।। ओम शान्ति ।।

BK Google: www.bkgoogle.org	Website: www.shivbabas.org